आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2689 • उदयपुर, शुक्रवार 06 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

झांसी (उत्तरप्रदेश) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज झांसी, (उत्तरप्रदेश) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् संजीव जी बुधोलिया, श्री रामकथा आयोजन समिति झांसी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 51, कृत्रिम अंग वितरण 32, कैलीपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अनुराग जी शर्मा (सांसद, झांसी), अध्यक्षता श्रीमान् पवन गौतम जी (अध्यक्ष, जिला पंचायत झांसी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् रामतीर्थ जी सिंहल (महापौर नगर निगम, झांसी), श्रीमान् संजीव जी बुधोलिया (श्री रामकृपा सेवा समिति अध्यक्ष), श्रीमान् विद्या प्रकाश जी दुबे (सभासद वार्ड न. 14 झांसी), श्रीमान् लक्ष्मीकांत जी (प्रधानाचार्य) रहे। नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो), श्री भंवरसिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश जी शर्मा , श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरीश सिंह जी रावत, श्री कपिल जी व्यास (सहायक), श्री अनिल जी पालीपाल (फोटोग्राफर) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

ऊना (हिमाचल प्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को बाबा बाल जी राधाकृश्णा मंदिर, ऊना में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता हिमातों कर्श परिषद, ऊना रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 142, कृत्रिम अंग माप 51, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 18 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संत बाबा बालजी (चेयरमेन राधाकृष्ण मन्दिर ट्रस्ट, ऊना), अध्यक्षता श्री प्रेम कुमार जी धूमल (पूर्व मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश), विशिष्ट अतिथि श्री वीरेन्द्र कंवर (कृशि एवं पशुपालन मंत्री), श्री सतपाल जी सती (चेयरमेन, प्रदेश वित्त आयोग), श्री जितेन्द्र जी कंवर (प्रदेश अध्यक्ष, हिमान्तों कर्श परिषद ऊना), श्री रसील सिंह जी मनकोटिया (शाखा संयोजक, हमीरपुर) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लांबा (अस्थि रोग विशेशज्ञ), श्री सुरेन्द्र जी सोनवाल (पी.एन.डो.), श्री नरेश जी वैश्णव (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री मनीश जी हिन्डोनिया, (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (कैमरामेन) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक 08 मई, 2022

▪ रामपुर, उत्तरप्रदेश
▪ मनसा, पंजाब
▪ औरंगाबाद

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 8 मई, 2022

स्थान
महाजन भवन, सालीमार रोड, जम्बु
दिपर्चन मंगल कार्यालय राजापेठ, अमरावती, महाराष्ट्र
होटल रेगल, कपूल कम्पनी चौक, रेलवे स्टेशन के पास, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

ज्ञान व आचरण

एक विद्यार्थी अपने काम में बहुत सफल हो रहा था। दूसरे विद्यार्थियों ने उससे पूछा कि तुम्हारी सफलता का राज क्या है? उसने कहा, प्रातःकाल मैं सरस्वती की पूजा करता हूं। उनका स्तोत्र बोलता हूं, इस कारण मैं सफल हो रहा हूं। एक विद्यार्थी ने इस बात को सफलता का गुर मानकर उसका अनुकरण करने का निश्चय किया। सरस्वती की प्रतिमा ले आया। विधिपूर्वक उसके सामने स्तोत्र बोलना शुरू कर दिया। जब परीक्षा का परिणाम आया तो देखा वह अनुत्तीर्ण था। वह छात्र उसके पास गया, जिसने सरस्वती की पूजा को अपनी सफलता का कारण बताया था। बोला, मैंने तुम्हारा अनुकरण किया, फिर भी मुझे सफलता नहीं मिली, ऐसा क्यों? उसने कहा, ऐसा तो नहीं होना चाहिए। अच्छा बताओ, पूजा के साथ तुमने पढ़ाई तो मन लगाकर की या नहीं? वह तो नहीं की। जब मन लगाकर पढ़ना ही है, तो फिर पूजा–पाठ क्यों करता?

यही तुम्हारी सबसे बड़ी भूल रही। अच्छा जो हुआ, सो हुआ, अब मैं तुम्हें एक श्लोक सुनाता हूं, सुनो

उद्यमः साहसं धैर्य,
बुद्धि शक्ति पराक्रमः।
षडेते यत्र विद्यन्ते,
तत्र देवः सहायकम्।।

देवता सहायता कहां करता है? जहां उद्यम है, साहस है, धैर्य है, बुद्धि है, शक्ति है और पराक्रम यानी पुरुषार्थ है। ये छह बातें हैं, वहां देवता भी सहायक बनते हैं। जहां यह सब नहीं, कोरी पूजा है, वहां कोई देवता पास भी नहीं फटकता। मेरी सहायता देवता करते हैं, क्योंकि मैं इन छह में विश्वास करता हूं। हमें ऐसा काम करना चाहिए, जो वास्तव में ज्ञान और आचार की दूरी को मिटा सके।

कर्म और भावना

गाय ने केला देखकर मुँह मोड़ लिया.. औरत ने गाय के सामने जाकर फिर उसके मुँह मे केला देना चाहा, लेकिन ... गाय ने केला नहीं खाया, पर औरत केला खिलाने के लिये पीछे ही पड़ी थी... जब औरत नहीं मानी, तो गाय सींग मारने को हुई.. औरत डरकर बिना केला खिलाये चली गयी। औरत के जाने के बाद पास खड़ा साँड बोला– "वह इतने 'प्यार से' केला खिला रही थी, तूने केला भी नहीं खाया और उसे डराकर भगा भी दिया"

प्यार नहीं मजबूरी... आज एकादशी है, औरत मुझे केला खिलाकर पुण्य कमाना चाहती है... वैसे यह मुझे कभी नहीं पूछती, गलती से उसके मकान के आगे चली जाती हूँ तो डंडा लेकर मारने को दौड़ती है.।

गाय बोली– प्रेम से सूखी रोटी भी मिल जाये, तो अमृत तुल्य है जो केवल अपना भला चाहता है वह दुर्योधन है जो अपनों का भला चाहता है वह युधिष्ठिर है और... जो सबका भला चाहता है वह श्रीकृष्ण है। अतः कर्म के साथ–साथ भावनाएं भी महत्व रखती हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

लंकिनी एक राक्षसी थी। लंका की द्वारपाल। फिर भी संतो जैसी वाणी बोलती–

तात् स्वर्ग अपबर्ग सुख,
धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि,
जो सुख लव सतसंग।।

ऐसे सत्संग की कृपा हो गयी। बजरंग बली की कृपा हो गयी महाराज और हनुमान जी के साथ –साथ आइये अपने मन को मिलाकर के चरणों के पीछे–पीछे चलते हैं, हनुमान जी आगे –आगे पधार रहे हैं। अंगद जी पधार रहे हैं, जामवंत जी पधार रहे हैं, नल और नील पधार रहे और आगे जाकर के प्यास लगी कुछ कन्दरा में पधारे, कुछ गुफाओं में पधारे, कुछ गिरि में पधारे कुछ पहाड़ी के ऊपर चढ़े। अपना जीवन भी ऐसा ही है।

अपने जीवन को देखते रहिये। अपने जीवन को परखते रहिये। कब–कब हर्शोल्लास हुआ, कब हमें प्रभु की कृपा की अनुभूति हुई। कब ये लगा कि परिवर्तन से क्या घबराना है।

बन्धन–बन्धन क्या करते हैं
ये बन्धन तो मन के बन्धन है।।

हनुमान जी ने एक पर्वत के ऊपर जाकर के देखा कि एक गुफा है। गुफा बहुत बड़ी है और उसमे एक मन्दिर बना हुआ है। अपने मन को मन्दिर बना लीजिए। अपने मन में भगवान के दर्शन कर लीजिए अपने परिवार से हेत बढ़ा लीजिए। अपने पड़ोस से प्यार कर लीजिए। अपने समाज की कुरुतियों का उल्लंघन कर लीजिए। कुरुतियों को मिटा दीजियेगा। सुऋतियां बहा लीजियेगा। और इसी भावना के साथ हनुमान जी ने देखा। एक पावन मन–मन्दिर और तेजस्वीनी स्वयं प्रभाजी वहाँ बिराजी हुई है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 info@narayanseva.org

सम्पादकीय

सेवा, साधना है। यह साध्य तक पहुँचने का सर्वसुलभ मार्ग है। यों तो साध्य तक जाने के लिए अनुभवियों व विद्वानों ने अनेक साधन सुझाए हैं। अनेक ने उनका प्रयोग करके सिद्धियां भी पाई हैं। पर सेवारूपी साधन तो सर्वसुलभ है। हमारे चारों ओर ऐसे मानव एवं प्राणी हैं जिन्हें तत्काल सेवा की आवश्यकता है। यह जरूरी नहीं है कि हम कोई बड़ी सेवा करें, बड़ी राशि खर्च करें तभी सेवा होगी। छोटी–बड़ी सेवा यह तो भावात्मक भेद है। गुणात्मकता ये तो प्रत्येक सेवा का एक सा महत्व है। हमारे पास यदि धन है तो धन लगाकर, धन नहीं है तो समय लगाकर, धन और समय दोनों नहीं है तो सेवा कार्य को सराहकर भी सेवा–पथिक बना जा सकता है। यदि किसी के पास ये तीनों ही साधन हैं तो फिर तो क्या कहना? सेवा कैसी भी हो, कहीं भी हो, कितनी भी हो तथा कभी भी हो, सब परमात्मा की दृष्टि में रहती है। यह ईश्वरीय कार्य में मानव का सहयोग ही है तथा मानव जीवन को सफल करने का मंत्र भी है।

कुछ काव्यमय

दीनदुखी कैसे सुखी, बनें यही हो चाह।
करुणा नैनों में भरे, ऐसी बने निगाह।।
देख किसी की पीर को, मन व्याकुल हो जाय।
ताप मिटे जब दीन का, मन शीतल हो पाय।।
हाथ उठे सेवा करें, तो पावनता छाय।
दीनदुखी के स्पर्श से, कर पावन हो जाय।।
कदम बने सेवा पथिक, बढ़े लक्ष्य की ओर।
बंधे दीनदयाल से, मेरी जीवन डोर।।
मैं सोचूं ऐसा सदा, सेवा मेरा काम।
तब ईश्वर के प्रेम से, बन पाऊँ निष्काम।।

अपनों से अपनी बात

व्यक्तिगत व सार्वजनिक

भगवान महावीर ने श्रावक के लिए आचार–संहिता दी। उसका एक व्रत है–भोगोपभोग व्रत। इसका अर्थ है, भोग की सीमा करना। संपत्ति कितनी ही हो सकती है, पर वैयक्तिक भोग की सीमा वांछनीय है।

विश्व के धनाढ्य व्यक्ति रोकफेलर की बेटी लंदन गई। वह बाजार में कुछ खरीदना चाहती थी। अनेक फोटोग्राफर साथ में हो गए। वह एक जूते की दुकान पर गई। चप्पल देखे। उनका मूल्य अधिक था। उसने कहा–मैं खरीद नहीं सकती, मूल्य अधिक है। पत्रकार साथ में था। उसने पूछा–'आप तो अरबपति की

लाड़ली हैं, फिर पैसे की बात क्यों करती हैं? रोकफेलर का संस्थान लाखों–करोड़ों का दान करता है। इस स्थिति में आपकी बात समझ में नहीं आती।' वह बोली–मैं एक अरबपति की लड़की हूं। व्यापार में करोड़ों रुपये लग सकते हैं, पर हमारा व्यक्तिगत बजट बहुत कम है। हम अपने व्यक्तिगत उपभोग के लिए अधिक खर्च नहीं कर सकते।'

इस घटना के संदर्भ में मुझे भगवान् महावीर के द्वारा निर्धारित श्रावक आचार–संहिता के एक व्रत की स्मृति होती है।

व्रत है भोग–उपभोग की सीमा। भगवान् महावीर का अनन्य श्रावक था आनन्द, करोड़ों का स्वामी। अपार संपदा, विस्तृत व्यवसाय, कुटुम्ब का अधिपति।

पर उसका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सीधा और सादगीपूर्ण था। स्वयं के रहन–सहन और खान–पान पर बहुत सीमित व्यय होता था। –

कैलाश 'मानव'

तूफान का सामना

लड़की कार चला रही थी। पास वाली सीट पर पिता बैठे थे। कुछ आगे तेज तूफान दिखाई देने लगा। लड़की पिता से बोली–कार रोक दूँ?

पिता ने उत्तर दिया–नहीं, कार मत रोको। चलती चलो। कुछ आगे जाने पर तूफान का वेग और तेज हो गया। लड़की कार पर सही नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उसने पिता से पुनः पूछा–अब तो कार रोक दूँ?

उसने देखा कुछ कारे वहीं सड़क के किनारे पर खड़ी थी और उनके चालक तूफान के गुजरने के इंतजार में थे। बहुत मुश्किल से वह स्टेयरिंग पर नियंत्रण रखती हुई, पिता की

आज्ञानुसार लगातार कार चलाती रही और 2–3 किमी आगे जाने के बाद पिता से पूछ बैठी– आपने उस समय रूकने के लिए क्यों नहीं कहा जब मैं तूफान में बड़ी मुश्किल से कार चला पा रही थी और अब आप रूकने के लिए कह रहे हैं, जबकि तूफान गुजर चुका है।

इस पर पिता ने कहा–जरा पीछे मुड़कर देखो। लड़की ने देखा तो पाया कि पीछे तूफान का वेग बढ़ गया है जबकि वह तूफान को पार कर के आगे निकल चुके है। पिता ने बेटी को समझाया– परिथितियां बेहतर होने की प्रतीक्षा में लोग जीवनभर वहीं रह जाते हैं जब जो लोग तूफान के बीच में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, वे ही सफल होते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

मित्रो! सतत् रूप से किये गए छोटे –छोटे प्रयायों से बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है।

खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा।

राह में बाधाएँ कितनी ही क्यों न आएं परंतु प्रयास सदैव अनवरत् होने चाहिए। चरेवैति। चरेवैति।

– **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

इस घटना से कैलाश सोचने पर मजबूर हो गया। जो कोट उसने सर्दी से ठिठुरते व्यक्ति को पहनाया वह तो उसके घर में सालों से बेकार पड़ा था। इस तरह तो हर घर में ढेर सारे कपड़े ऐसे मिल जायेंगे जो काम में नहीं आते और बेकार पड़े रहते हैं। अगर ये तमाम कपड़े जरूरतमन्दों तक पहुँच जाये तो कितने लोगों का भला हो सकता है। कैलाश के मन में एक नई योजना जन्म लेने लगी। लोगों के घरों से बेकार पड़े वस्त्रों को एकत्र कर सर्दी में ठिठुरते लोगों को पहुँचाना। कमला से इसका जिक्र किया तो उसने भी उत्साह जताया और आसपास के घरों से बेकार पड़े वस्त्रों को एकत्र करने की सोची। आम घरों में पुराने कपड़े देकर बर्तन लेने का चलन है। कमला जब इन घरों में गरीबों हेतु कपड़े मांगने गई तो किसी ने इन्कार किया किया, सबने खुशी खुशी इस सेवा यज्ञ में अपनी भागीदारी निश्चित की। देखते ही देखते तीन चार गठरी कपड़े एकत्र हो गये। कैलाश प्रसन्न हो गया। जिस तरह का उत्साह मफत काका के विदेशी वस्त्रों को वितरित करने मे आता था, वैसा ही अब पुनः महसूस होने लगा। कैलाश अपने साथियों को लेकर शहर के अलग अलग स्थानों पर ठण्ड से ठिठुरते लोगों में ये कपड़े बांट आया। कपड़े एकत्र करने में तो समय लगता है मगर वितरित करने का कार्य तो झटपट निपट जाता है। इस कार्य में मिले सहयोग और इसे सम्पन्न करने में जो संतोष की अनुभूति हुई उससे कैलाश का मन इस कार्य को व्यापक रूप देने का हुआ। अब तक कमला आसपास के घरों से ही कपड़े लाती थी मगर पुराने कपड़े तो हर घर में होते हैं, कैलाश का निशाना अब हर घर हो गया। उसने एक ऊंट गाड़ी किराये पर ली, उस पर एक माईक फिट किया, दो चार बेनर लगाये और अपने कुछ साथियों को लेकर निकल पड़ा उदयपुर की सड़कों पर। वह माईक पर लोगों से विनती करता कि अपने घरों में पड़े पुराने, बेकार कपड़े दान में दीजिए ताकि ठंड में ठिठुरते किसी गरीब का भला हो। हम आपके द्वार पर आये हैं, कृपया अधिक से अधिक कपड़ दान कर इस पुण्य के भागीदार बने। लोगों ने बढ़ चढ़ कर इस कार्य में अपना अपना योगदान दिया। कैलाश को भी जितनी आशा नही थी उसस अधिक कपड़े एकत्र हो गये थे। कपड़ों का अम्बार देख कर वह सोचने पर विवश हो गया कि इनका वितरण कहां किया जाये। उसे अचानक ही बीसलपुर के आस पास के गांवों के गरीबों, वंचितों की याद आ गई।

अंश - 086

जीरा, सौंफ और अजवायन की गोलियां करती है। कीड़ों से बचाव

- बच्चों के पेट में कीड़े होने से पाचन संबंधी परेशानी हो सकती है। भूख न लगना, जी मिचलना, उल्टी आदि लक्षण दिखते हैं। कीड़ों से बचाव में घरेलू उपाय भी कारगर है।
- एक – एक चम्मच जीरा और आधा हिस्सा अजवायन को हींग के साथ घी में भून लें और गुड़ के साथ गोलियां बना लें । बच्चा छोटा है तो 2–3 गोलियां और बड़ा है। तो 5–6 गोलियां सुबह– शाम को दें।
- अमलताश के फल का गुदा निकालकर दूध के साथ उबाल लें। इसे कुछ दिनों तक रोज दें।
- अमलताश के फल को सुखाकर सेंधा नमक –गुड़ के साथ गोलियां बनाकर दें।
- रात को सोने से पहले 10 ग्राम कलौंजी को पीसकर 3 चम्मच शहद के साथ देने से भी फायदा होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

परोपकार का फल ही साथ जाता है

एक बार गुरुनानक देव जी लाहौर में ठहरे हुए थे। उसी शहर के एक धनी आदमी दुनीचन्द गुरुनानक देव जी के पास आए और बोले– 'मैं इस शहर का सबसे धनवान आदमी हूँ। जो आप कहोगे, मैं करूँगा।'

नानक देव जी ने उनको एक सूई दी और कहा– 'आप इस सूई को मुझे अगले जन्म में, जब हम मिलेंगे, दे देना। उस आदमी ने सूई ले ली। फिर उसे विचार आया कि यह सूई मैं अपने साथ कैसे ले जा सकता हूँ? वह गुरु नानक देव जी से बोले– 'नहीं गुरु जी, मैं यह सूई अपने साथ नही ले जा सकता हूँ। तभी गुरु नानक देव जी बोले– 'भाई! जो धन– दौलत आपने इकट्ठी कर रखी है, इसे गरीब और जरूरतमंदो में बांट दो। भण्डारे लगवाओ, महिला आश्रम, चिकित्सालय खुलवाओ। यही तुम्हारे साथ जाएगा।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

ये झाड़ोली, झाड़ोल, ओबरा कलां, खुर्द, कौन ले गया ? किसने फर्नीचर पैकिंग मेटेरियल दिया? कहाँ से मालोविका जी पंवार मिले, कथोड़िया परिवार, कथा निकालने का काम, बड़ी गरीबी आ गयी, कपड़े नहीं, बीमार हो गये, तो औषधि नहीं।

जर्जर तन चिपक्या पेटांरा,
गाल खालरा खाडा रे।
कठै अंगरख्या कठै पगरख्या
आधा फिरे उगाड़ा रे।।

ये घासीराम जी ने चित्रण किया। इसी चित्रण में डाक्टर आर.के. अग्रवाल साहब पधारते गये, बीच में तो कई बार सैन्ट्रल जेल पधारे, एक बार मै छोटा मोटा सा,

प्राणों का पिंजर।
उधर कटा वारंट मौत का,
कल की पेशी पड़ी रही।
जेन्टलमैन एक वक्त शाम को,
सैर को जाता था।।
पाँच चार थे दोस्त साथ में,
बातें बहुत बनाता था।
लगी जब ठोकर गिरे बाबू जी,
लगी हाथ में घड़ी रही।।
परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।

हम सब परदेशी हैं। मुसाफिर हैं। धर्मशाला के यात्री हैं। यह बड़ी धर्मशाला मिल गई। पत्नी जी मिल गई, ये बच्चा हो गया, प्रशान्त जी, ये कल्पना जी हो गयी। वन्दना जी ब्यावर से पधार गई पुत्रवधू बनकर। पलक, महर्षि, कल्पना गोयल मुम्बई के लिए विवाह किया– अजमेर किया में। ओजस, आस्था हो गई, सब परमात्मा की कृपा है। बडी धर्मशाला, हमारा बड़ा परिवार, हमें कर्त्तव्य निभाना है। करें सदा सदकर्म विहंसते, कर्मयोग अपनाना है, मन की गतियाँ, मन की तरंगें बढती गई, ये सुथारी केन्द्र चल रहा है, ये सूरण के लिये सड़क बन गई, आनन्द हुआ। सायरा वालों ने भी राजेन्द्र जी मेहता से कहा–हमारे सायरा में भी शिविर लगाओ। जरूर भगवान बनवायेगा, हमारी सांसें भी हमारे हाथ में नहीं है।

हां कितना बयां करूं मैं,
इस दुनियाँ की अजब गति।
चन्दन आना और जाना है,
फर्क नहीं है राई रति।।
नेक कमाई की है जिसने,
बस उसकी ही खरी रही।
परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।।

आज 01 मई 2020 है, दो दिन पहले ही 29 अप्रैल परम आदरणीय कमला जी के साथ 29 अप्रैल 1968 को जो विवाह हुआ था। उसकी बावनवीं वर्षगाँठ हुई। समय आता जाता रहेगा, उत्सवप्रिय होना अच्छा है। मन में खुशियाँ, उत्साह, उमंग, उल्लास रहता है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 439 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर – 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023